मदर जोन्स ज़िन्दाबाद!

लेखन: जीन बैथेल

चित्रांकन: गैरी मैक्कॉर्ड

भाषन्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

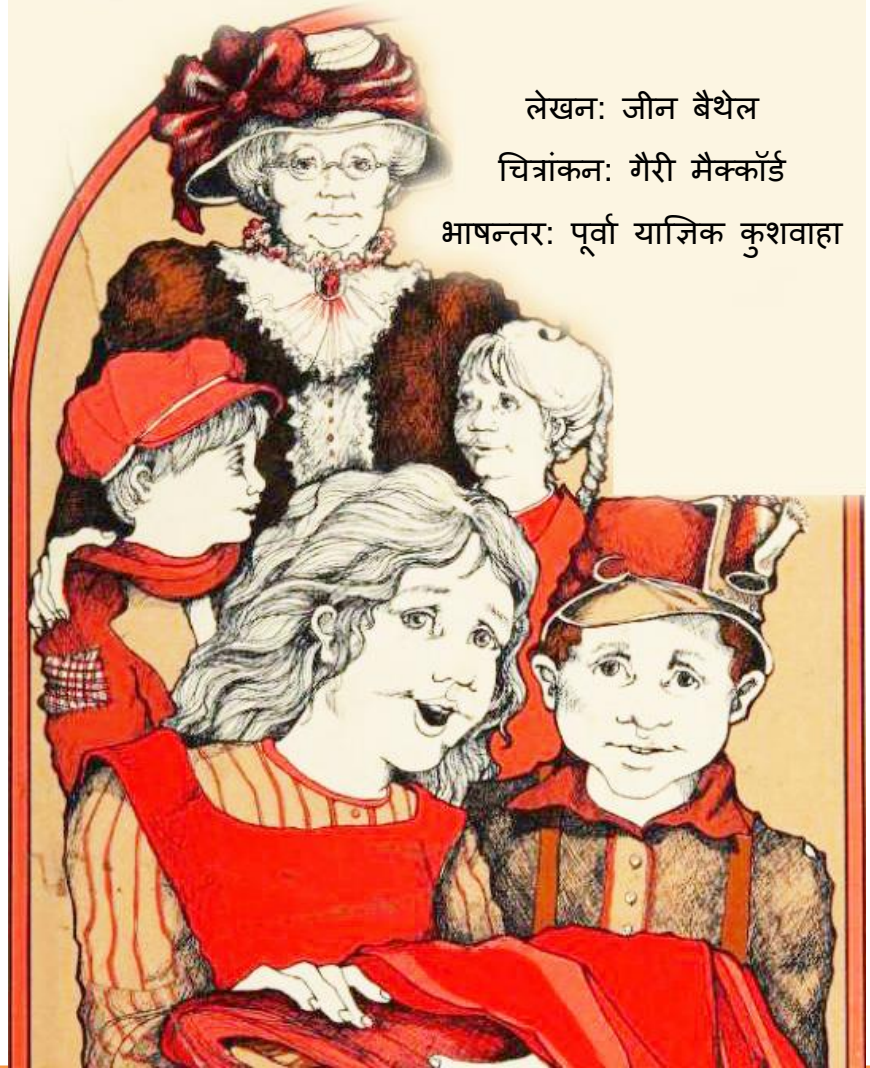

साल है 1903। जेम्स दस वर्ष का है। वह एक कपड़ा मिल में 2 डॉलर प्रति सप्ताह पर काम करता है। उसे इस काम से नफ़रत है। काम मुश्किल भी है और ख़तरनाक भी। उसकी छोटी बहन और कई दूसरे बच्चे भी वहाँ काम करते हैं।

मदर जोन्स कहलाने वाली एक जोशीली वृद्ध स्त्री का मानना था कि मिल में काम करने के लिए ये बच्चे बहुत छोटे हैं। सो एक दिन उन्होंने राष्ट्रपति थियोडोर रूजवैल्ट से मदद मांगने के लिए लम्बे कूच का आयोजन किया। जेम्स और सौ दूसरे बच्चे अपना घर-बार छोड़ उनके साथ पैदल निकले। वे फिलैडैल्फिया से निकल, न्यू जर्सी होते हुए न्यू यॉर्क शहर गए ताकि वे राष्ट्रपति के ऑयस्टर बे स्थित ग्रीष्म आवास में उनसे मिल सकें।

मज़दूरों को संगठित करने वाली पहली अमरीकी स्त्री की सरल भाषा में लिखी गई इस कहानी को पढ़ने में बच्चों को आनन्द आएगा। क्योंकि यह जेम्स की आँखों देखी घटनाओं का 'जस का तस' बयान करती है।

मदर जोन्स ज़िन्दाबाद!

लेखन: जीन बैथेल

चित्रांकन: गैरी मैक्कॉर्ड

भाषन्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

अनुक्रम पेज

1. मेरा नाम है जेम्स
2. लो आ गईं मदर जोन्स
3. शुरू हुआ वह लम्बा पैदल कूच
4. हमारे सामने आईं अड़चनें
5. न्यू जर्सी को किया पार
6. आख़िरकार पहुँचे हम न्यू यॉर्क
7. कोनी द्वीप तक का सफ़र
8. राष्ट्रपति का गरमियों का आवास
9. लेखक की टिप्पणी

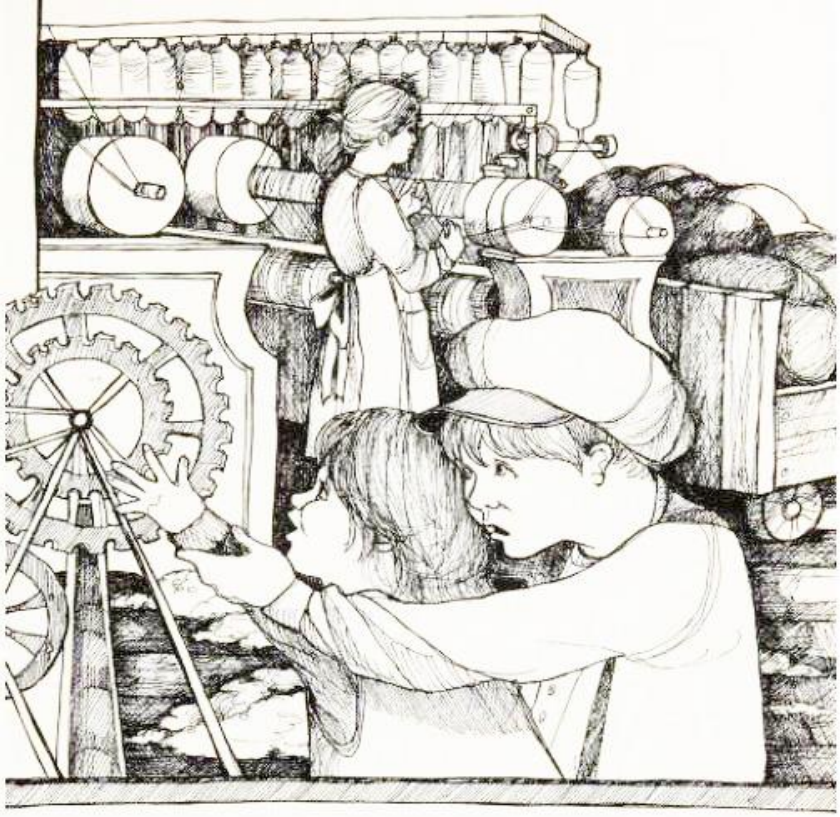

अध्याय 1

मेरा नाम है जेम्स

फिलैडैल्फिया, नवम्बर 1903

यह मेरी बहन एमी है।

वह सिर्फ सात साल की है।

हम इस पुरानी, गन्दी मिल में काम करते हैं।

यह दुनिया का सबसे बुरा काम है।

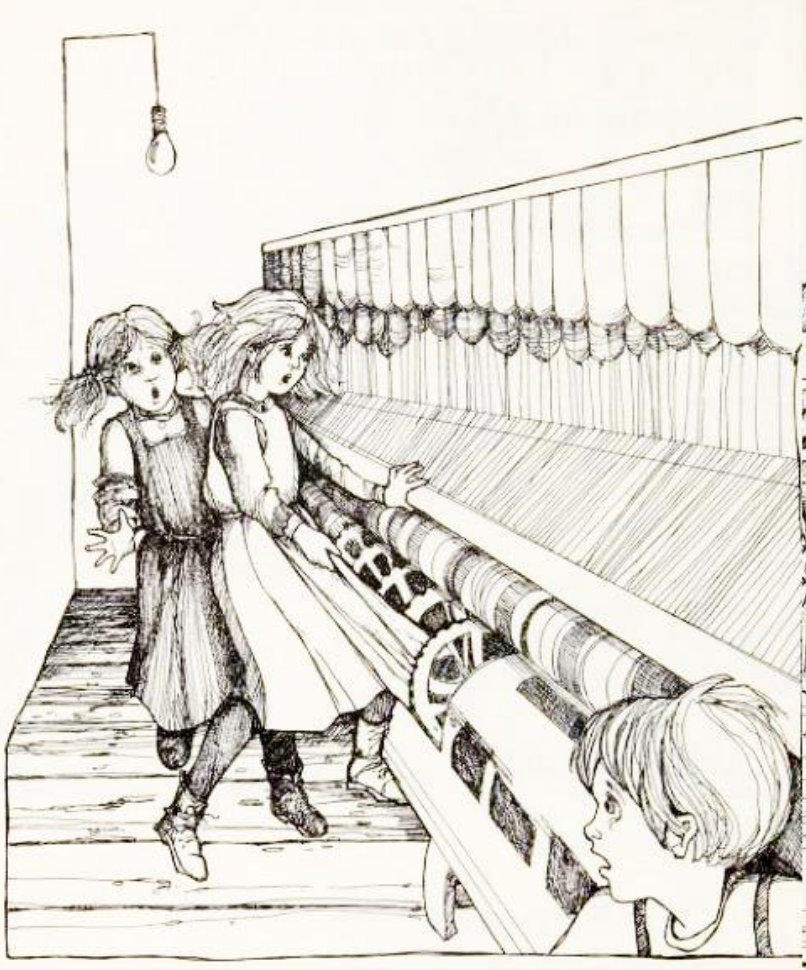

हम हर दिन बारह घंटे काम करते हैं।
हम स्कूल नहीं जाते।
हम कभी बाहर धूप में नहीं निकलते।
हम हमेशा थके-मांदे रहते हैं।
कभी तो हमारे साथ हादसे भी हो जाते हैं, हम घायल हो जाते हैं।
वे हमें सप्ताह में दो डॉलर का मेहनताना देते हैं।

वहाँ उधर मेरे पिता हैं।
उन्हें सप्ताह में तेरह डॉलर मिलते हैं।
इससे हमारे परिवार का गुज़ारा नहीं चल सकता।
इसीलिए एमी और मुझे काम करना पड़ता है।
हमें इस काम से नफ़रत है।
दरअसल जो भी यहाँ काम करता है वह इससे नफ़रत करता है।

हमें मिल के मालिक से भी नफ़रत है।

वह कंजूस है और हमें वाज़िब मेहनताना नहीं देता।

वह अमीर है, पर हम ग़रीब ही बने रहते हैं।

हमें लगता है कि यह नाइन्साफ़ी है।

अध्याय 2

लो आ गईं मदर जोन्स

फिलैडैल्फिया, नवम्बर 1903

पिछली गर्मियों में हमने इस बारे में कुछ करने की कोशिश की थी।

हम मिल मालिक से मिलने गए।

"मेहरबानी कर हमारा मेहनताना बढ़ा दीजिए," पिता ने कहा, "ताकि हमारे बच्चों को मिल में काम न करना पड़े।"

"हम स्कूल जाना चाहते हैं," मैंने जोड़ा।

पर उन्होंने एक न सुनी।

"चुपचाप काम पर लौटो नहीं तो मैं निकाल बाहर करूंगा।"

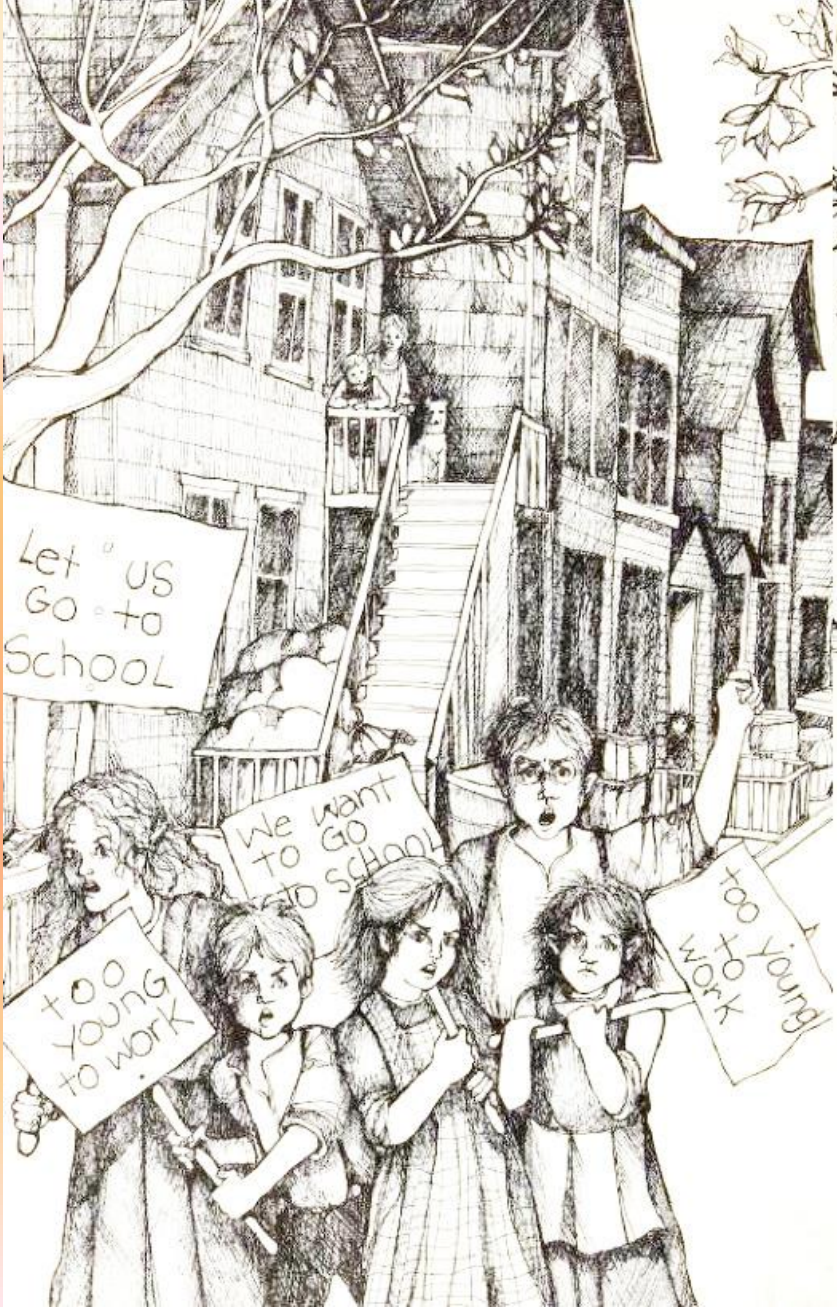

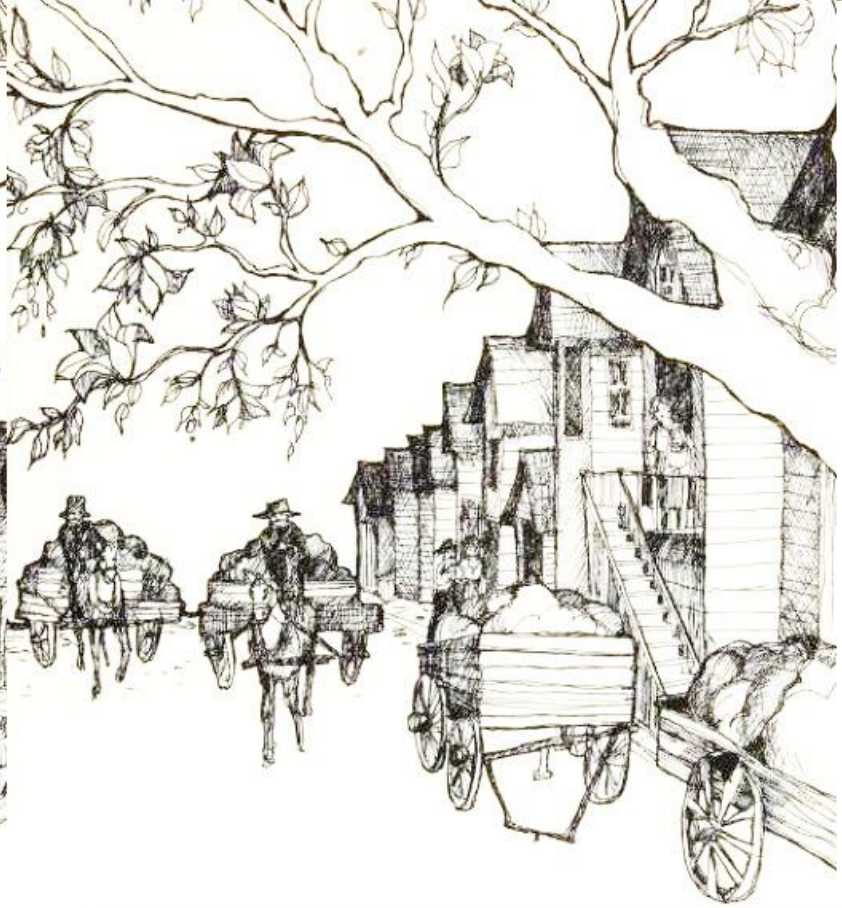

हमें इससे बहुत ही गुस्सा आया।
हम मिल से बाहर निकल आए।
हम सबने हड़ताल कर दी!
हमने मिल के सामने चक्कर लगाए।
हमने इन्तज़ार किया कि मालिक मज़दूरी बढ़ाने की बात कहे।

तब मदर जोन्स कहलाने वाली एक महिला आई।

वे काफ़ी उम्र-दराज़ थीं - मेरी दादी जितनी बूढ़ी। पर थीं बड़ी ही हिम्मत वाली। उन्होंने मिल मालिक के सामने मुट्ठियाँ तानीं।

''शर्म आनी चाहिए तुम्हें,'' वे गरजीं।

''बच्चों से आदमियों का काम करवाते हो!''

''मदर जोन्स ज़िन्दाबाद!'' हमने नारा लगाया।

''इन बच्चों को आज़ाद करो!'' वे डपट कर बोलीं।

''इनके माता-पिता को गुज़ारा चलाने लायक वेतन तो दो!''

''कभी नहीं!'' मिल मालिक गुस्सा कर बोला।

''तब हम राष्ट्रपति से मिलने जाएंगे!'' मदर जोन्स ने ऐलान किया।

''वे क्या कर सकते है?'' पिता ने जानना चाहा। ''क्या वे हमारी मज़दूरी बढ़ा सकते हैं? क्या वे हमारे बच्चों को मिल से बाहर रख सकते हैं?''

''चलो अपन पता करते हैं,'' मदर जोन्स ने कहा। ''हम उनसे मदद मांगेंगे। यही तो राष्ट्रपतियों का काम है - लोगों की मदद करना।''

''हुर्रे!'' हम खुशी से चीखे।

''चलो राष्ट्रपति से मिलने चलते हैं।''

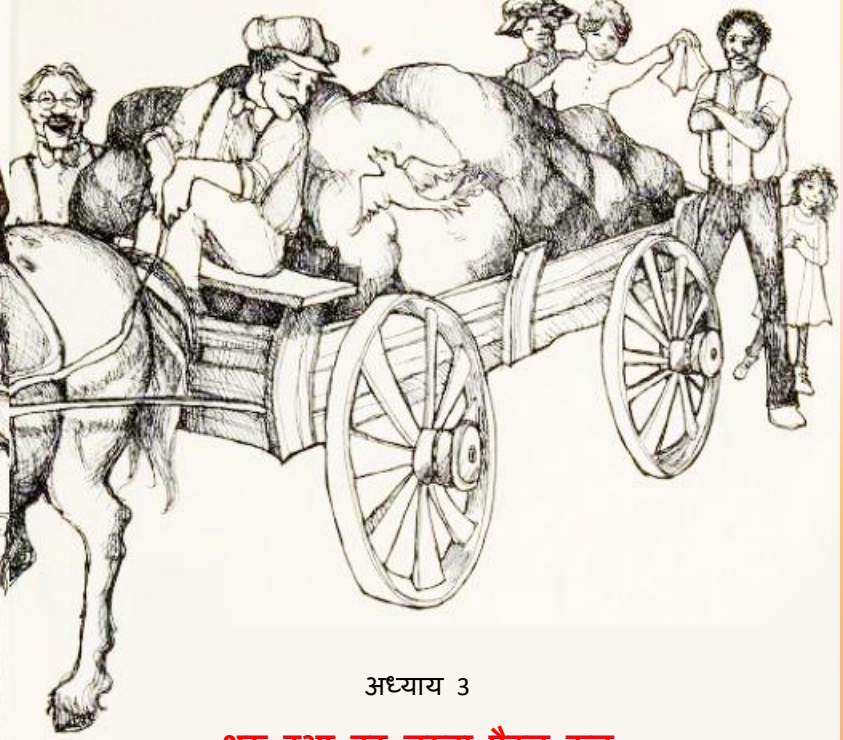

अध्याय 3

शुरू हुआ वह लम्बा पैदल कूच

फिलैडैल्फिया, 7 जुलाई 1903

अखबार में हमारे पैदल कूच के बारे में बड़ी-सी ख़बर छपी।

कस्बे का हरेक बाशिन्दा हमें बिदा करने आया।

मदर जोन्स ने जुलूस की अगुवाई की।

पिताजी और मैं उनके ठीक पीछे थे। और हमारे पीछे थे तकरीबन दो सौ लोग। एमी भी साथ आना चाहती थी। पर वह बहुत छोटी है। सो वह माँ और नन्हे के साथ घर ही रही।

क्या बताएं हमने कैसी-कैसी मस्ती की। संगीत बजा।

लोगों ने नारे-जयकारे लगाए। और हम चल पड़े।

हप-दो-तीन-चार!

हमें पैदल-पैदल बहुत ही दूर जाना था।

राष्ट्रपति के गरमियों वाले घर तक, पूरे 125 मील दूर।

हप-दो-तीन-चार!

पर हमें इसकी परवाह न थी।

हम तो उस गन्दी, पुरानी मिल से बाहर निकलने का मौका पा ख़ुश थे।

रास्ते में लोगों ने हमें पानी और खाना दिया। हमने चलते-चलते ही दोपहरी का खाना खाया। दिन गर्म था, सो कुछ समय बाद हमारी चाल सुस्त होने लगी। मदर जोन्स भी थकने लगीं।

मैंने छकड़े में बैठने में उनकी मदद की। उन्होंने छोटे बच्चों को अपने साथ बैठने दिया।

शाम चार बजे हमें रुकना पड़ा।
हम आराम करने खेतों में ही पसर गए।
"हम रात यहीं बिताएंगे," मदर जोन्स ने कहा।
मैंने तम्बू तानने में पुरुषों की मदद की।
रात के खाने के बाद हमने बातचीत की और गीत भी गाए।
पिताजी को नींद आ गई।
पर मैं देर तक सितारों को निहारता जगा बैठा रहा। मैं खुश था।
मैं कभी भी मिल में काम करने नहीं लौटना चाहता था।

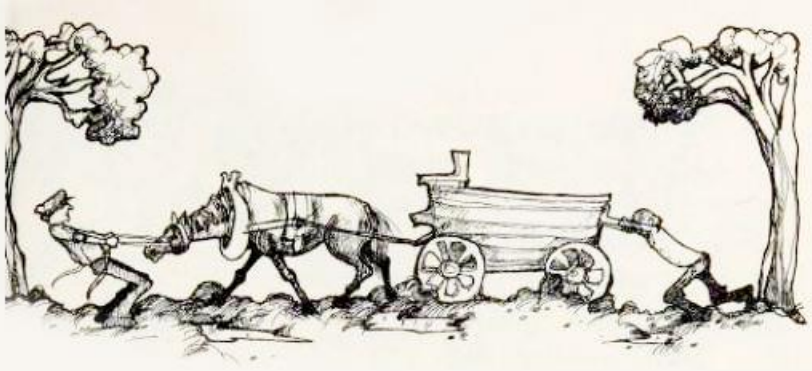

अध्याय 4

हमारे सामने आईं अड़चनें

पैन्सिलवेनिया, 8-10 जुलाई 1903

अगला दिन बेहद गर्म था। सूरज ने हमें झुलसा दिया। हमारी रफ्तार कम से कमतर होती गई।

कुछ लोग बीमार भी होने लगे।

"भई हम तो लौटते हैं।" कुछ ने कहा, "गरमी सहन नहीं हो रही।" यों कई लोग वापस मुड़े और घर लौट गए।

कूच का दूसरा दिन खत्म होने तक सिर्फ सौ लोग रह गए थे।

"हिम्मत न हारना," मदर जोन्स ने हौसला बढ़ाया।

"हमें अभी काफ़ी दूर जाना है।"

तीसरे दिन बारिश हुई। सड़कें कीचड़-कादे में बदल गईं। हमारे छकड़े उसमे फंसने-धंसने लगे। उन्हें धक्का मार निकालने में मैंने भी पुरुषों की मदद की।

तब शुरु हुआ कीड़े-मकोड़ों का हमला। वे गुंजारते आए और डंक मारने लगे। उन्होंने हम सबको पागल ही कर दिया।

ज़ाहिर था कुछ और लोग घर लौट गए।

अगले दिन पिताजी के पैर में चोट लग गई।

उनके लिए पैदल चलना ही मुश्किल हो गया।

"चलो हम भी घर चलते हैं," वे बोले।

"मेहरबानी से मुझे रहने दीजिए ना।"

"मैं राष्ट्रपति को देखना चाहता हूँ।"

"ठीक है बेटा। तुम्हें कामयाबी हासिल हो," उन्होंने कहा और मुझे गले से लगा, लौट गए।

मदर जोन्स मुझे देख मुस्कुराईं।

"शाबास! यही जज़्बा होना चाहिए। जुटे रहो।"

"जी ज़रूर," मैने कहा। "अगर आप कूच जारी रख सकती हैं, तो मैं भी यही करूंगा।"

अध्याय 5

न्यू जर्सी को किया पार

न्यू जर्सी, 11-23 जुलाई 1903

जब पुल को पार कर हम न्यू जर्सी पहुँचे, तो जुलूस में सिर्फ़ साठ जन बचे थे।

"तुम सब बढ़िया कर रहे हो!" मदर जोन्स ने कहा।

हम दिनों-दिन चलते रहे। हम कई कस्बों में रुके।

हर जगह मदर जोन्स ने भाषण दिया।

उसके बाद हम टोपी घुमाते ताकि लोग उसमें सिक्के डाल सकें।

हमारा अभियान मशहूर हो रहा था।
अखबारों ने इसे
"मिल के बच्चों का कूच" कहा।

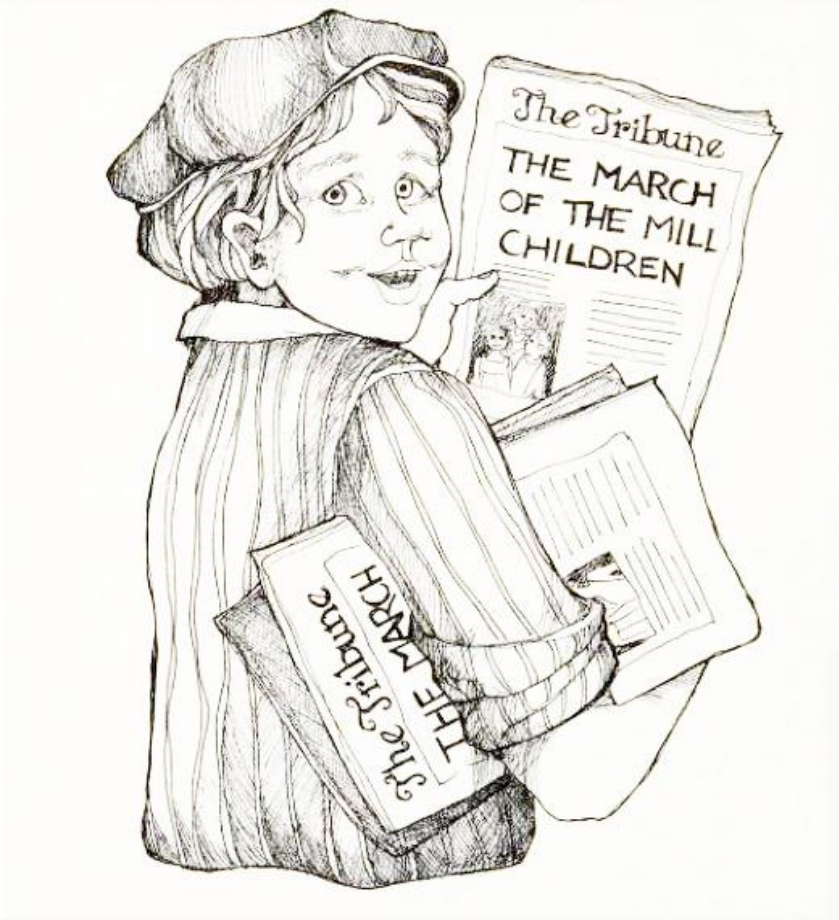

एक रात तो हम होटल में सोए।

मैंने पहले कभी होटल देखा ही नहीं था। मुझे होटल बड़ा ही अच्छा लगा। सोने के लिए मुझ अकेले को एक पूरा बिस्तर मिला!

पर ज़्यादातर रातों को हम या तो खेतों में ही सोते या फिर किसी खाली इमारत में।

मैं थका और गन्दा था, पर इसकी मुझे परवाह न थी।

मैं राष्ट्रपति से मिलने जो जा रहा था।

मैं सोचता कि हो सकता है वे मुझसे हाथ मिलाएं!

हम चलते गए। आख़िरकार हम हडसन नदी तक जा पहुँचे।

हम नदी के दूसरी ओर न्यू यॉर्क शहर देख पा रहे थे।

हम वहाँ पहुँचने को बेताब थे।

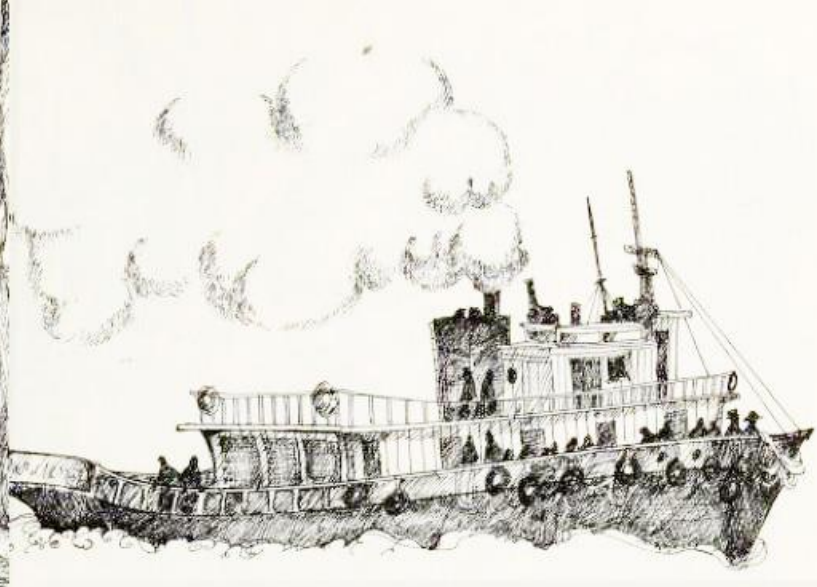

अध्याय 6

आख़िरकार पहुँचे न्यू यॉर्क

23 जुलाई 1903

हमने एक बड़ी-सी नाव में बैठ नदी पार की। बहुत ही मज़ा आया। मेरा बस चलता तो मैं पूरा दिन नाव में ही बिताता।

आख़िरकार हम न्यू यॉर्क में थे।

क्या जगह थी!

इतने ढ़ेर सारे लोग।

इतनी सारी ऊँची-ऊँची इमारतें।

और किस कदर शोरगुल!

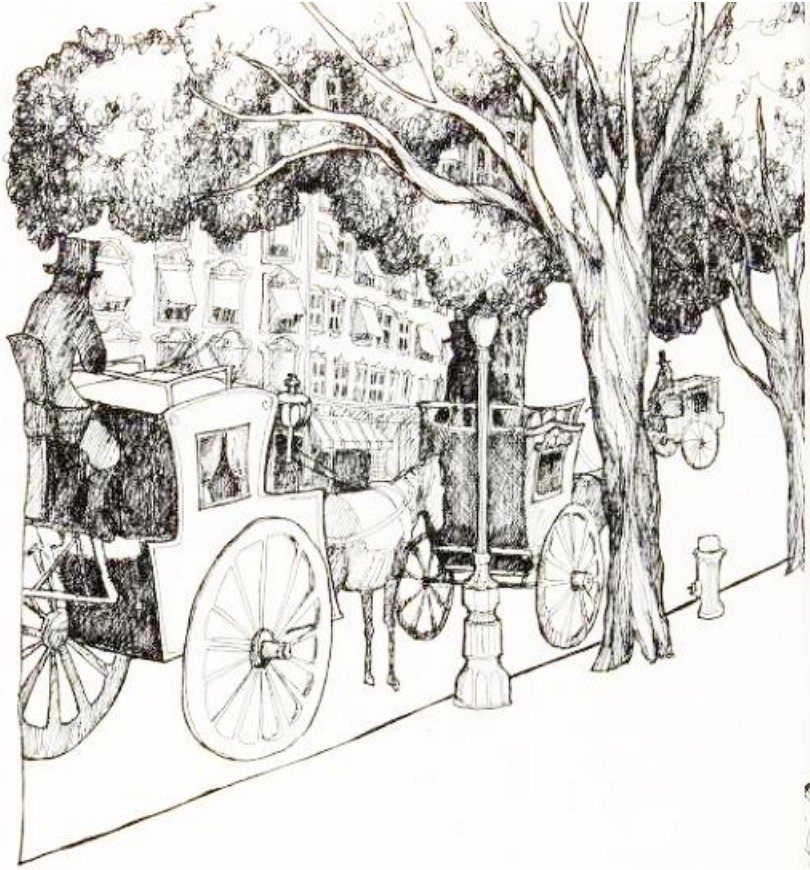

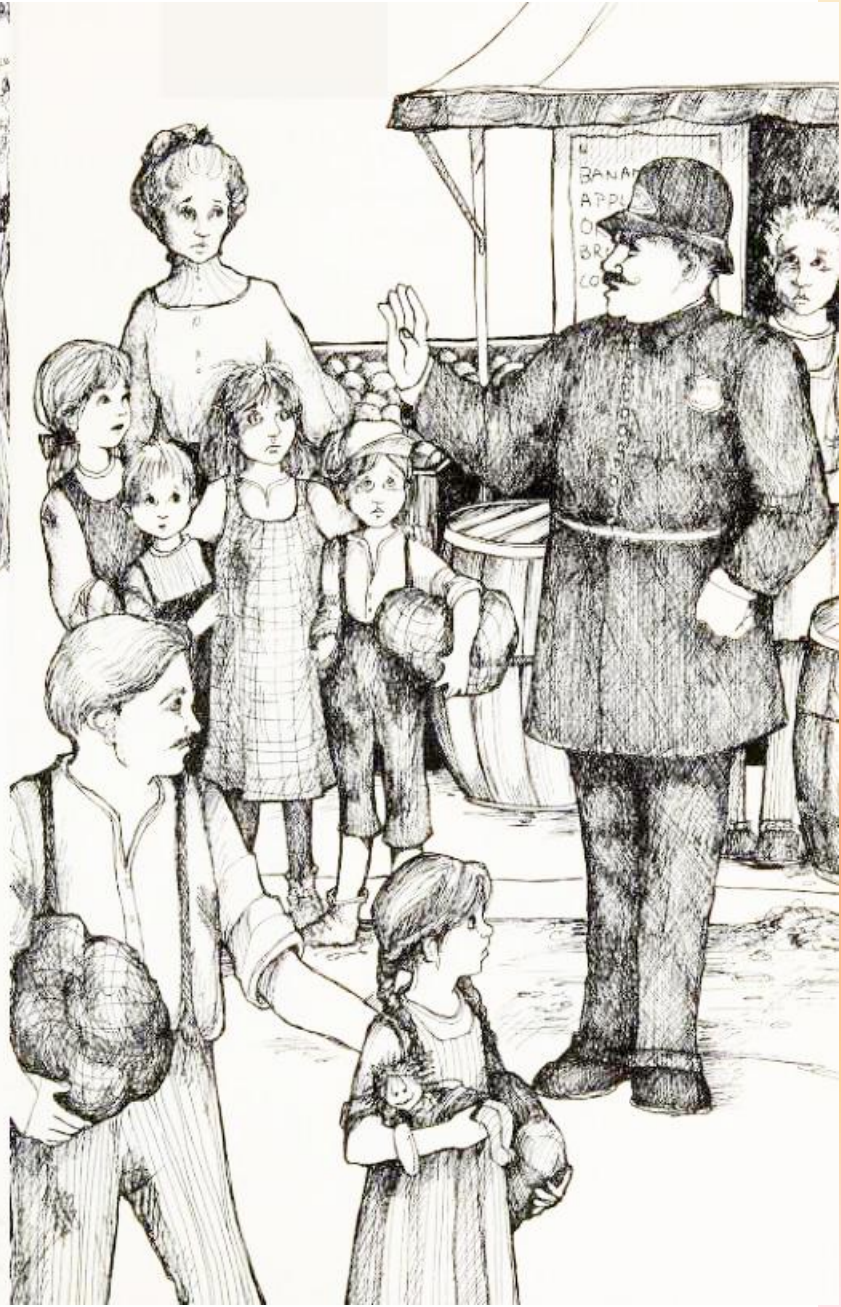

“रुको!” पुलिस वाला डपट कर बोला।
“तुम लोग यहाँ जुलूस नहीं निकाल सकते!”
मैं तो सहम गया।

"बकवास!" मदर जोन्स बोलीं।
"मैं जाकर मेयर से बात करूंगी।"

"आपको हमें जुलूस निकालने देना होगा मेयर साहब।"
"बेशक निकालिए," मेयर बोले।
"मुझे जुलूस अच्छे लगते हैं।"

जुलूस बहुत ही अच्छा रहा।

कई लोग हमें देखने आए।

मदर जोन्स ने मुझे मंच पर चढ़ाया।

"इस मासूम को देखिए।

इसे मिल में काम करना पड़ता है, ताकि वह खाना ख़रीद सके।"

"मैं स्कूल जाना चाहता हूँ," मैं बोला।

"मैं पढ़ना-लिखना सीखना चाहता हूँ।"

लोगों ने दाद दे हमारा जोश बढाया।

अगले दिन अख़बार में मेरे बारे में ख़बर छपी। मदर जोन्स ने मुझे पढ़ कर सुनाई।

मेरे परिवार को मुझ पर फ़क्र हुआ होगा।

अध्याय 7

कोनी द्वीप का सफ़र

कोनी द्वीप, 27 जुलाई 1903

हमारा अगला पड़ाव था कोनी द्वीप।

हम वहाँ तट पर घूमे।

हमने जंगली जानवरों का तमाशा देखा।

उस रात जब मदर जोन्स अपना भाषण दे रही थीं, हम खाली पिंजड़ों में घुसे। हम जंगली जानवरों की तरह चिंघाड़े। हमने पिंजड़ों की सलाखें हिलाईं।

"इन बेचारे बच्चों को देखें," मदर जोन्स बोलीं।

"ये मिलों में जानवरों की तरह कैद हैं। बाल श्रम जुर्म है।

हमें कानून बदलना ही होगा।

थियोडोर रूज़वैल्ट हम आ रहे हैं!"

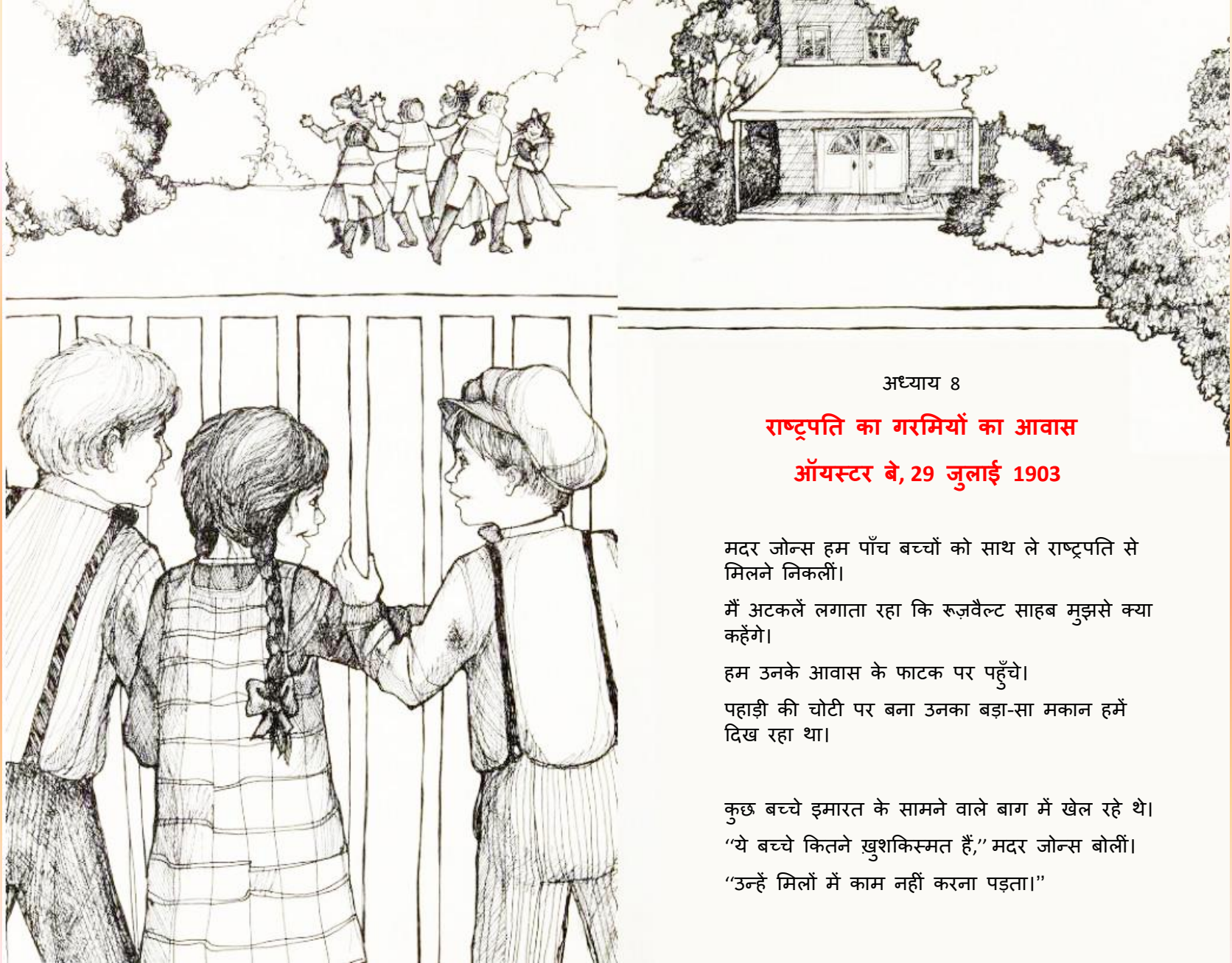

अध्याय 8

राष्ट्रपति का गरमियों का आवास

ऑयस्टर बे, 29 जुलाई 1903

मदर जोन्स हम पाँच बच्चों को साथ ले राष्ट्रपति से मिलने निकलीं।

मैं अटकलें लगाता रहा कि रूज़वैल्ट साहब मुझसे क्या कहेंगे।

हम उनके आवास के फाटक पर पहुँचे।

पहाड़ी की चोटी पर बना उनका बड़ा-सा मकान हमें दिख रहा था।

कुछ बच्चे इमारत के सामने वाले बाग में खेल रहे थे।

"ये बच्चे कितने ख़ुशकिस्मत हैं," मदर जोन्स बोलीं।

"उन्हें मिलों में काम नहीं करना पड़ता।"

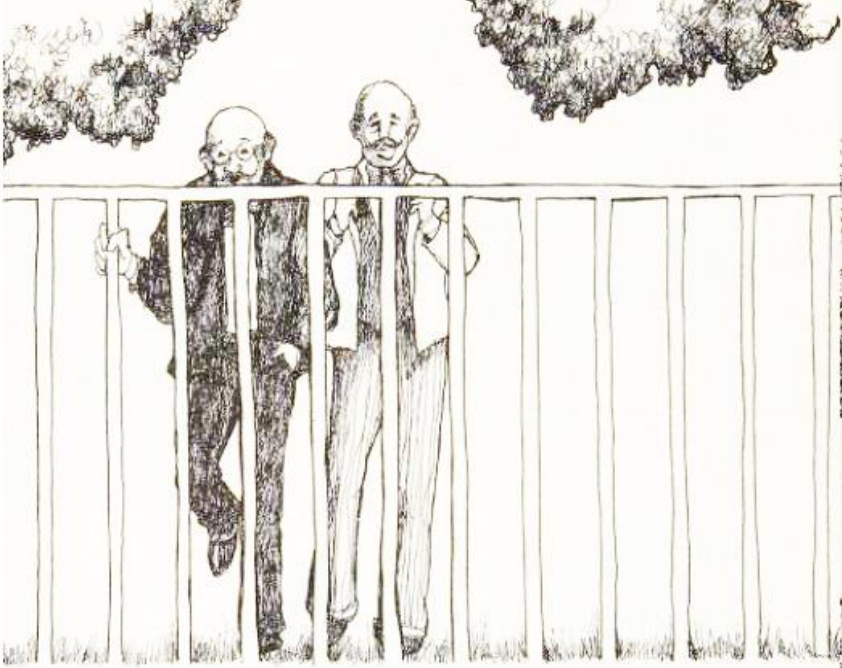

दो शख्स फाटक पर आए। "मदर जोन्स?" वे बोले।

"राष्ट्रपति आपसे मिल नहीं सकेंगे।"

मदर जोन्स सकते में आ गईं।

"वे हमसे नहीं मिलेंगे? हम 22 दिन पैदल चले हैं। और वे हमसे मिलेंगे तक नहीं!"

"माफ करें मैडम, मिस्टर रूज़वैल्ट ने कहा है कि वे आपकी कोई मदद नही कर सकते।"

''माफ़ करना बच्चों,'' मदर जोन्स ने निराशा से कहा।

''बुरा मत मानिए,'' मैंने उन्हें दिलासा दी।

''हमने पूरी कोशिश की।''

पर उन्हें बहुत ही अफ़सोस हुआ। और मुझे भी।
मैं मिल में काम करना ही नहीं चाहता था।

पर खेल खत्म हो चुका था। हमारा अभियान नाकाम रहा था।

हम रेलगाड़ी से घर लौटे।

अध्याय 9

मिल में काम पर लौटना

फिलैडैल्फिया, नवम्बर 1903

मैं उसी पुराने काम पर लौट आया हूँ।

एमी और मुझे अब भी सप्ताह के दो डॉलर ही मिलते हैं।

मिल शोरगुल से भरी और गन्दी है।

मुझे इससे अब भी नफ़रत है।

पर ज़रा सुनो तो! यह शोर क्या है?

लोग खुशी से चिल्ला रहे हैं।

अरे! यह तो मदर जोन्स हैं! वे वापस आई हैं!

"तुम लोगों के लिए एक ख़ुशख़बरी है," वे बोलीं। "हमारा कूच पूरी तरह नाकाम नहीं रहा। गवर्नर हमारी मदद करेंगे।"

"हुर्रे! हुर्रे! मदर जोन्स की जय हो!"

"देखना किसी दिन कानून ज़रूर बदलेगा," उन्होंने हमसे कहा। "किसी दिन तुम लोगों के हालात बेहतर होंगे।"

पिताजी, एमी और मैं यह सुन ख़ुश हुए। अब कुछ ऐसा तो है जिसकी उम्मीद हम कर सकते हैं।

लेखक की टिप्पणी

वास्तव में एक मदर जोन्स थीं। उन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी बाल और वयस्क मज़दूरों की स्थितियाँ बेहतर बनाने की कोशिश में खपा दी थी।

सन् 1903 में, जो इस कहानी का समय है, अमरीका में 10 लाख लड़कियाँ और लड़के जिनकी उम्र 14 बरस से कम थी, खानों, मिलों और कारखानों में काम करते थे।

उनका काम कठिन भी था और ख़तरनाक भी। कुछ बाल मज़दूरों को कोयला खदानों में कोयले के बारीक चूरे से या कपड़ा मिलों में कपास के महीन रोंए से, साँस से जुड़ी बीमारियाँ हो जाती थीं। कई बच्चे कारखानों की मशीनों की चपेट में आ अपने हाथ या पैर खो बैठते थे। पर सबसे दुखद यह था कि बच्चों को स्कूल जाने का मौका तक नहीं मिलता था। वे अँगूठा छाप ही रह जाते थे।

1870 से लेकर 1930 तक मेरी हैरिस जोन्स, या मदर जोन्स वाजिब मज़दूरी और बेहतर कार्य-स्थितियों के लिए संघर्ष करती रहीं। वे पश्चिमी वर्जीनिया की कोयला खदानों से लेकर कोलराडो की ताम्बा खानों तक, और पैन्सिलवेनिया से लेकर अलाबामा की कपड़ा मिलों में जाती रहीं। वे वहाँ प्रदर्शन करतीं, भाषण देतीं, और मज़दूरों को एकजुट होने को उकसाती रहीं। वे अमरीका की पहली स्त्री थीं जिन्होंने मज़दूरों को संगठित किया था।

जिस समय मदर जोन्स बच्चों के पैदल जुलूस की अगुवाई कर राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वैल्ट से मिलने निकलीं थीं, वे तिहत्तर वर्ष की थीं। हालांकि राष्ट्रपति रूज़वैल्ट ख़ुद बाल-श्रम का विरोध करते थे वे कांग्रेस को उसे रोकने का एक संघीय कानून बनाने पर मना नहीं पाए। ऐसा कानून पारित होने में पैंतीस साल और लगे।

पर मिल में काम करने वाले बच्चों का यह लम्बा और मुश्किल कूच पूरी तरह से असफल नहीं रहा। मदर जोन्स ने अपनी आत्मकथा में इसकी चर्चा करते हुए लिखा:

हमने देश का ध्यान बालश्रम के जुर्म की ओर आकर्षित किया। हालांकि कपड़ा मिल मज़दूरों की हड़ताल नाकाम रही और बच्चों को फिर से काम पर लौटना पड़ा, कुछ ही समय बाद पैन्सिलवेनिया की विधान सभा ने एक बाल श्रम कानून पारित किया इससे चौदह साल से कम उम्र के हज़ारों बच्चे कारखानों और मिलों में काम करने से बच सके।